प्रार्थना क्रम

प्रार्थना की बुलाहट

"क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है॥" (यशायाह 55:9)

अगुआ	विशाल पॉल	
प्रारंभिक गीत	न. म. गी. कि. 334	पाक कलाम खुदा का
तैयारी	क्रम संख्या 3 से 5	विशाल पॉल
प्रथम पाठ	यशायाह 61:1-4, 8-9	
दूसरा पाठ	2 कुरि. 6:3-10	
गीत	न. म. गी. कि. 183	रब्ब ख़ुदावंद बादशाह है
सुसमाचार	मत्ती 5:1-12	विशाल पॉल
उपदेश		पॉल स्वरूप
निकाया का अक़ीदा	क्रम संख्या 14	सब
सूचनाएँ		पॉल स्वरूप
सिफ़ारशी दुआएँ	क्रम संख्या 16	
गुनाहों का इक़रार	क्रम संख्या 17- 19	विशाल पॉल
क्षमादान और शांति अभिवादन	क्रम संख्या 20 और 22	पॉल स्वरूप
प्रार्थना और हदिये का गीत	न. म. गी. कि. 68	महिमा से तू जो भरा है
	जो लोग इस हफ्ते अपना जन्मदिन और सालगिरह मना रहे हैं.	
अन्तिम गीत	न. म. गी. कि. 67	हम से बनी न जाए

कौलेक्ट

हे सर्व शक्तिमान परमेश्वर, हमारे प्रभु येशु मसीह के पिता, आपका पुत्र सच्चे सुख का आदर्श नमूना है, पिता परमेश्वर, हम प्रार्थना करते हैं कि अपने पुत्र, प्रभु येशु के स्वरूप में हमें नया बनाइए जिससे हम उनके आज्ञा पालन के मार्ग पर चलते हुए उसके शाश्वत सुख में समभागी हों; उन्ही के द्वारा जो आपके और पवित्र आत्मा के साथ एक परमेश्वर है, और अब तथा सदा-सर्वदा जीवित और राज्य करते हैं। **आमीन।**

Please pray for our church family members who are in need of your prayer support:

Ms. Sanjivani Agarwal, Master Isaiah, Mr. Eugene Samuel, Rev. G H Grose, Mrs. Hilda Immanuel, Ms. Shiela Choudhary, Mr. Dalip Kumar Ghosh, Mrs. E. S. Ruskin, Mr. Neelu Joseph, Ms. Mellisa Dass, Mrs. Virginia Sen, Mr. Suresh Kukde, Mrs. Jyotika Suraj, Mrs. Savitri, Mrs. Cynthia Nathaniel, Mr. Samuel Robert, Mr. Raphael Satyavrata, Mr. Emmanuel Soren and Mrs. Sheela Singh. Pray for the relief from the corona virus around the globe.

GREEN PARK FREE CHURCH

CNI, Diocese of Delhi,

A-24 Green Park, New Delhi-110016

पवित्र आत्मा का अवतरण-पर्व के पश्चात दूसरा रविवार

14 जून 2020

प्रभु येशु हमें बताते हैं की सच्चे अर्थ में कौन मनुष्य सुखी है।

Presbyter-in-Charge	Associate Presbyter	Hon Secretary	Hon Treasurer
Rev Dr Paul Swarup 9811397771	Rev. Vishal R. Paul 9313912594, 8700784065	Mr. Dennis Singh 9811269792, 8700319032	Mrs. Kiran Mohan 9811477154

Regular Sunday Service

Hindi: 8:30 a.m., English: 10:30 a.m., Evening Worship: 5:30 p.m.

Church Office: 011– 42637508, 26561703,

gpfc.delhi@gmail.com, officegpfc@gmail.com

PLEASE SWITCH OFF YOUR MOBILE PHONES WHILE IN THE CHURCH

Pastor Writes

पवित्रशास्त्र का यह भाग यीशु की शिक्षाओं के प्रसिद्ध हिस्सों में से एक है, जिसे महात्मा गांधी भी प्रभावित थे। हालांकि, यह बहुत आसानी से समझ में नहीं आता है और कुछ लोग ही इसका पालन करने की परवाह करते हैं। खंड के अंत में जो चुनौती आती है, वह यह है कि केवल परमेश्वर के वचन के श्रोता नहीं, बल्कि इसके कर्ता बने। यही यीशु अपने शिष्यों को बनाना और करना चाहता था। वह चाहता था कि वे दुनिया से भिन्न और अलग हों और इसलिए पहाड़ी उपदेश को मसीही संस्कृति के काउंटर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। (जॉन स्टॉट)

एक अराजक दुनिया के बीच में एक सांस्कृतिक विकल्प की तलाश होनी चाहिए। यह खोज पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित है जो हमें परमेश्वर के राज्य के मूल्यों के आधार की जीवन शैली में ले जाती है। युवा लगातार सही चीजों की तलाश कर रहे हैं लेकिन गलत स्थानों पर। वे चर्च को एक ऐसी जगह के रूप में नहीं देखते हैं जो जीवन, प्रेम और शांति को वास्तविकता के रूप में बनाता है। चर्च दुर्भाग्य से दुनिया के अनुरूप है और प्रति-सांस्कृतिक नहीं है। चर्च का मतलब एक पवित्र 'लोगों का समूह था जो दुनिया से विशिष्ट और अलग होने था। हालाँकि, चर्च अलग होने के बजाय दुनिया की तरह रहा है। मसीह के चेलों के लिए इन मार्गों में चुनौती अंधेरे के बीच में चमकने के लिए है। हमारी नैतिकता हमारे धार्मिक व्यवहार और धार्मिक भक्ति में शास्त्री और फरीसियों से अधिक है। आस्तिक को नाममात्र के मसीह और धर्मनिरपेक्ष दुनिया से अलग होना है। वे परमेश्वर के शासन में होने और परमेश्वर के बच्चों के रूप में रहने का मतलब क्या है यह चित्रित करना है।

मत्ती 5:1-12 को धन्य्वादिया कहा जाता है। यहाँ विचार धन्य या प्रसन्न होने है। यीशु के विचार में, आशीशे उससे नहीं आती जो हमारे पास है, बल्कि हमारे जीवन के आंतरिक गुणों से आती है जो हमें धन्य बना देगा। इस हिसे को 'पहाड़ी उपदेश' नाम दिया गया है क्यूंकि यह एक सुविधाजनक स्थान से एक पहाड़ की चोटी पर दिया गया था जहाँ से यीशु सभी लोगों को देख सकता था और वह भी सुनने वालों को दिखाई दे रहा था।

I. पश्चाताप

"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" प्रारंभ में भौतिक रूप से गरीब होने का मतलब था - जरूरतमंदों के पास कोई शरण नहीं थी लेकिन परमेश्वर थे। भजन - यह गरीब आदमी - एक व्यक्ति जो खुद को बचाने में असमर्थ है और इसलिए उद्धार के लिए परमेश्वर को देखता है। अभिप्राय किसी ऐसे व्यक्ति से है जिसका उसे सब छीन लिया गया है जो उसके पास भौतिक रूप से है कि अपनी आत्मा में भी वह अपनी परिस्थितियों को बदलने के बारे में कुछ भी नहीं सोच सकता है। उसकी आंतरिक भावना टूट गई है। आत्मा में गरीब का मतलब परमेश्वर आगे हमारे आत्मिक दिवालियापन को स्वीकार करना भी हो सकता है। परन्तु चुंगी लेने वाले ने दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर आंखें उठाना भी न चाहा, वरन अपनी छाती पीट-पीटकर कहा; हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर। लुका 18:10-14 लौदीकिया की कलीसिया- जिन्होंने सोचा था कि वे समृद्ध और धनवान थे - मुझे पता है कि आप मनहूस, गरीब अंधे और नग्न हैं। प्रकाशित वाक्य 3:14-21

मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है, केवल क्रूस से लिपटा रहूँगा! नग्न पोशाक के लिए परमेश्वर के पास आओ; लाचार, अनुग्रह के लिए तुझे देखते है; मुझे धो डालो, उद्धारकर्ता या मैं मर जाऊंगा

जो लोग परमेश्वर की दया पर भरोसा करते हैं वे आत्मा में गरीब हैं। परमेश्वर के शासन के लिए जो उद्धार लाता है यह एक उपहार के रूप में बिल्कुल मुफ्त है क्योंकि यह पूरी तरह से अवांछित है। यह पूरी तरह से परमेश्वर का अनुग्रह है कि हम बच गए। कष्टदायक क्षति का समय समाप्त हो जाएगा और वे परमेश्वर की सांत्वना से लाभान्वित होंगे। यह भी आत्मा में गरीबों के लिए परमेश्वर के राज्य का आना है। आत्मा में गरीब वे होंगे जो अपने वर्तमान (कमजोर) स्थिति में बोझ महसूस करते हैं, और इसे परमेश्वर की अनुपस्थिति के संदर्भ में देखते हैं; जो धैर्यपूर्वक उस स्थिति को सहन करता है, लेकिन परमेश्वर को अपनी ओर से कार्य करने के लिए और निर्णायक रूप से उन्हें अपने लोगों के रूप में फिर से दावा करने के लिए। इस तरह के लोगों के पास स्वर्ग का राज्य है जो अब निकट आ गया है। एप्लीकेशन। परमेश्वर स्थितियों को उलट देंगे और गरीबों और जरूरतमंदों की आत्मा में हस्तक्षेप करेंगे।

धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे। यह शोक का दुःख नहीं है जिसके बारे में मसीह बात कर रहा है, बल्कि पश्चाताप का दुःख है - पछतावे की स्थिति। यीशु दूसरों के पापों पर रोया *फिलिप्पियों* 3:18 क्योंकि बहुतेरे ऐसी चाल चलते हैं, जिन की चर्चा मैं ने तुम से बार बार किया है और अब भी रो रोकर कहता हूं, कि वे अपनी चालचलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। 1662 बीसीपी क्रैमर - हम स्वीकार करते हैं और हमारे कई गुना पापों और दुष्टता से परे हैं। पौलुस *रोमियो* 7 में खुद के बारे में कराहते हैं - 'मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं!' शोक करने वाले, जो अपनी खुद की पापबुद्धि को पाल लेते हैं, उन्हें केवल उसी आराम से सुकून मिलेगा जो उनके संकट को दूर कर सकता है, अर्थात परमेश्वर की मुफ्त क्षमा।

धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। दूसरों के प्रति विनम्र और सौम्य रवैया।कभी-कभी हम परमेश्वर के सामने अपनी पापबुद्धि और कमजोरियों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं, लेकिन अगर कोई और कुछ कहता है तो हमें बड़ी समस्या होती है।डॉ। मार्टीन लॉयड जोन्स कहते हैं, नम्रता अनिवार्य रूप से स्वयं का एक सच्चा दृष्टिकोण है, स्वयं को दृष्टिकोण में व्यक्त करना और दूसरों से सम्मान से आचरण करना ... जो मनुष्य वास्तव में नम्र है वह वही है जो वास्तव में आश्चर्यचकित है कि परमेश्वर और अन्य लोग उसके बारे में सोचते हैं उसके साथ वैसा ही व्यवहार करते है। **वे पृथ्वी की विरासत पाएंगे** - पूरी चीज इसके विपरीत है जो दुनिया हमें सिखाती है। समाज हमें आक्रामक होना सिखाता है और उत्साही हमेशा दूसरों से बेहतर पाता है। भजन 37: 1 *"कुकर्मियों के कारण मत कुढ़, कुटिल काम करने वालों के विषय डाह न कर!"* भजन 37: 7 *"यहोवा के साम्हने चुपचाप रह, और धीरज से उसका आसरा रख; उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सुफल होते हैं, और वह बुरी युक्तियों को निकालता है!"*

II. धार्मिकता

धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे। आत्मिकता भूख सभी परमेश्वर के लोगों की विशेषता है। धार्मिकता - कानूनी, नैतिक और सामाजिक **कानूनी धार्मिकता** - तर्गसंगतता - परमेश्वर के साथ एक सही रिश्ता। **नैतिक धार्मिकता** - चरित्र और आचरण की धार्मिकता जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है - फारसी धार्मिकता के विपरीत। फरीसी नियमों के बाहरी अनुरूपता में रुचि रखते थे - दिल दिमाग और मकसद की आंतरिक धार्मिकता के विपरीत। **सामाजिक धार्मिकता** - उत्पीड़ित मनुष्यों के लिए मुक्ति की मांग करना। नागरिक अधिकारों को बढ़ावा देना, कानून अदालतों में न्याय, व्यवसाय में ईमानदारी और घर और परिवार के मामलों में सम्मान।

धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। उत्पीड़न मसीही वास्तविकता और सच्चाई का एक प्रतीक है। तिरस्कृत और ठुकराए जाने, अपमानित और सताए जाने की स्थिति, मसीही शिष्यत्व का उतना ही सामान्य चिह्न है जितना कि हृदय में पवित्र या दयालु होना।

धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हरो विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥

III. मेल-मिलाप कराने वाला

धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। दया - जरूरतमंद लोगों के लिए करुणा - क्लासिक उदाहरण अच्छा सामरी है। यदि आप क्षमा करते हैं तो आपके स्वर्गीय पिता भी क्षमा करेंगे - उदाहरण - निर्मम सेवक। कुछ भी अधिक स्पष्ट रूप से साबित नहीं होता है कि हमें क्षमा करने के लिए अपनी स्वयं की तत्परता से क्षमा दी गई है।

धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। लोकप्रिय व्याख्या अंदुणि शुद्धता की है। मुझमें एक स्वच्छ हृदय बनाइए हे परमेश्वर और मेरे भीतर एक सही भावना का नवीनीकरण कीजिए। दिल में शुद्ध वही होते हैं जो अपने उद्देश्य में एक दिमाग होते हैं। परमेश्वर और मनुष्यों के साथ उनके संबंधों में वे बिल्कुल पारदर्शी हैं। हम में से कोई भी मास्क पहनना पसंद नहीं करेगा।

धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। मेल कराने का अर्थ ईश्वरीय कार्य है, शांति का मतलब सुलह है और परमेश्वर इसके रचयिता हैं। परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे की कीमत पर हमारे साथ मेल कायम किया है। शांति आमतौर पर दर्द के माध्यम से आती है - जिस व्यक्ति को हमने चोट पहुंचाई है, उसके माफी माँगने का दर्द; उस व्यक्ति को डांटने की पीड़ा जिसने हमें घायल किया है; जब तक वे पश्चाताप नहीं करते, दोषी पक्ष को क्षमा करने से इनकार करने का दर्द। कभी-कभी दो पक्षों में सामंजस्य बनाने के लिए संघर्ष। सुनने का दर्द है, खुद को पूर्वाग्रह से मुक्त करने का, गलतफहमी को दूर करने का । धन्य्वादिया एक मसीही शिष्य के व्यापक चित्र को चित्रित करता है। जो अपनी आत्मिक गरीबी को स्वीकार करता है और उस पर शोक करता है। वह नम्र है और दूसरों की भलाई चाहता है और ईमानदार और शुद्ध रवैया अपनाता है। वह धार्मिकता का प्यासा है, विपत्ति और पाप से पीड़ित लोगों पर दया करता है। महामहिम शांतिदूत हैं। इन सबके बावजूद उसे सताया जाता है। मूल्य और मानक दुनिया के मूल्यों और मानकों के साथ सीधे संघर्ष में हैं। दुनिया अमीर होने का न्याय करती है, गरीबों का नहीं; खुश भाग्यशाली भाग्यशाली हैं, न कि जो बुराई को गंभीरता से लेते हैं और उस पर शोक करते हैं; मजबूत और रोष विनम्र और नम्र नहीं है; भूखे नहीं तृप्त; जो लोग कुटिल तरीकों से आवश्यक होने पर भी अपने इछाओ को प्राप्त करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में पृथक और अलग होकर उसके चरित्र का अनुकरण करें जेसा पहाड़ी उपदेश में वर्णित के रूप में और विरुध सांस्कृतिक होने के नाते।

शालोम

पॉल स्वरुप